DUSHYANTKUMAR KE KAVYA ME PRAGATISHIL CHETNA

दुश्यंन्तकुमार के काव्य में प्रगतिशील चेतना

Prof. Dr. D. V. Giri

Swami Vivekanand Senior College, Mantha, Jalna, Maharashtra, India.

आधुनिक कालीन हिंदी साहित्य में पारंपारिक रुढ़ियों, सिध्दान्तो, मान्यताओं एवं मर्यादाओं को नकारने का कार्य इस कालीन साहित्य में दिखाई देता है। इस काल के काव्य में व्यक्तिनिष्ठ और समाजनिष्ठ दृष्टिकोणों के निरंतर संघर्श के परिणाम स्वरुप साहित्य का सृजन हुआ है। मध्यकाल के साहित्य मे नायक की पहचान उसकी दिव्यता थी, पर आधुनिक काव्य में उसकी पहचान संघर्श और आत्मसंघर्श है। इस समय के कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता के जीवन मुल्य एवं संघर्श को वाणी दी है। प्रगतिशीलता यह जीवन के मुल्य और प्रणाली को प्रभावित करनेवाली एक नविन भाक्ति है। ऐसा साहित्य समाज के सुख दुःख की अभिव्यक्ति को महत्व देता है। इस तरह के साहित्य का उद्देश्य जन कल्याण का होता है।

प्रगतिशील कवि का उद्देश्य सामान्य व्यक्ति की जिंदगी को बेहतर बनाना होता है। इस साहित्य का ध्येय है जनकल्याण और इस उद्देश्य की पुर्ति के लिए शोषक और आततायी शक्तियों के विरोध में जनता के आत्मविश्वास को कवि जगाता है, तथा स्वस्थ सामाजिक जीवन के उपभोग के लिए मानवतावाद और जनवाद का समर्थन करता है वह निश्चय ही प्रगतिशील है। इन सभी विचारों का साक्षात्कार हमें कवि दुश्यंन्तकुमार के साहित्य में दिखाई देता है।

कवि ने समाज, राष्ट्र, तथा युग की समस्याओं को अपने काव्य का विषय बनाया। इनका काव्य यथार्थ एवं व्यापक सामाजिक चेतना का काव्य है। समकालीन यथार्थ का साक्षात्कार इनके काव्य में दिखाई देता हैं उन्हौने जन सामान्य की पीड़ा को स्वर दिया है। इनके काव्य का उद्देश्य भुखे–नंगे इन्सान के प्रति सहानुभुति व्यक्त करना रहा है। इन्हौंने कई काव्य सग्रंहो का निर्माण किया जिसमें,'सुर्य का स्वागत,' 'आवाजों के घेरे','जलते हूये वन का वसंत' 'साये में धूप' आदी उनकी प्रमूखकृतियाँ है। 'एक कंठ विशपायी' एक महत्वपूर्ण नाटक है। उनके प्रकाशित उपन्यासों में 'छोटे छोटे सवाल', 'दुहरी–जिंदगी', आँगन में एक वृक्ष प्रमुख उपन्यास है। उनका 'मन के कोण' यह एकांकी संग्रह काफी अधिक चर्चित रहा है।कवि ने जो भोगा, समझा उसे व्यक्त किया इनके काव्य में कल्पना और अनुभूति अधिक दिखाई देती है।

''घायलो की पीडितो की गूँज है वातावरण में एक मंदिर सा बना रण क्षेत्र मै इसका पुजारी। कन्दनों कोलाहलों के बीच यह आवाज भी है, अलग सबसे प्रबल सबसे मर्मभेदी और भारी।''

प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख कवि दुश्यंतकुमार ने हिंदी गजल विधा को नविन चेहरा दिया है। इन्होंने गजल को रोमानी और श्रुंगारिकता से निकालकर मनुष्य जीवन कें यथार्थ से जोड़ा है। उनकी गजलों में सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक, व्यक्तिगत, नैतिक विषयों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत हुआ है। उन्हौंने आम आदमी में चेतना जगाने का कार्य अपने साहित्य के माध्यम से किया है। स्वतंत्रता के पश्चात देश की सामाजिक परिस्थिति में कोई परिवर्तन नही हुआ। राजनेताओं व्दारा किए गए वादे झूठे साबित होने लगे थे। सामान्यजनता का मोहभंग हाने लगा था। ऐसी परिस्थिति में आम आदमी अत्यंत निराश हुआ था। देश की जनता की इस मनस्थिति को उजागर करत हुए दुश्यंत कुमार प्रस्तूत गज़ल लिखते है,

''कहाँ तो तथ था चरागाँ हर घर के लिए
कहाँ चराग मयस्सर नहीं भाहर के लिए।''

साहित्य और समाज का सबंध अत्यंत घनिश्ठ होता है। साहित्य में समाज की यथार्थ अभिव्यक्ति होती है। हमारे देश पर अनेक सालो तक अंग्रेजो का शासन रहा। 15 अगस्त 1947 में हम अंग्रेजो की बेडीयो से आजाद हुये। स्वतंत्रता प्राप्ती के पूर्व हमारे देश के लोग अंग्रेजो के अन्याय–अत्याचार से परेशान थे। स्वतंत्रता के बाद यहाँ की जनता में नवीन आशाएँ पल्लवित होने लगी थी, की अब हमें सब कुछ मिलेगा। लेकिन हमारे सरकार से उन्हें निराशा ही मिल रही थी। आम जनता की रोटी कपडा और मकान की समस्या तक हल नही हो रही थी। मजदूर पुँजीपतियों द्वारा शोसित हो रहे थे। स्वतंत्र भारत की सामन्य जनता के यथार्थ जीवन का चित्रण करते हूए दुश्येत कुमार कहते है कि स्वतंत्रतापूर्व तो राजनेताआँ ने जनता को सुख–सुविधाएँ देने का आस्वासन दिया था। लेकिन स्वतंत्रता के बाद उनके द्वारा दिए गए आस्वासन झूठे साबित हुए। स्वतंत्रता के बाद भी देश की सामान्य–जनता अत्यंत दयनिय अवस्था में जी रही है। पूँजीपति वर्गा व्दारा मजदूरों का शोषण हो रहा है। गजलकार ने भारत की आम जनता के बिकट अवस्था और सामाजिक परिवर्तन की अभिलाशा का यथार्थ चित्र प्रस्तूत किया है।

''न हो कमीज तो घुटनों से पेट ढक लेंगे
ये लोग कितना मुनासिब है इस सफर के लिए।''

आज स्वतंत्रता के बाद राजनिति एक धंदे के रुप में भारतीय समाज में प्रस्थपित हो रही है। राजनिति जो समाज को सेवा तथा देश के प्रति अपनी निष्ठा का प्रतिक थी उसके सभी निष्कर्ष ही बदल गए है। दुश्यंत कुमार की कविताओं में तत्कालीन राजनेताओं की भ्रष्ट छबि प्रतिबिंबित होती है। अत : उनका पुरा काव्य राजनिति से प्रभावित है। कवि के काव्य को पढ़ने से हम उस काल की राजनितिक स्थिति का अंदाज लगा सकते है।

''भूख है तो सब्रकर, रोटी नही तो क्या हुआ,
आजकल दिल्ली में है जेरे बहस ये मुद्दआ।''

राजनितिक स्थिति के साथ–साथ धार्मिक स्थिती का चित्रण भी दुश्यंत कुमार जी ने किया है। कवि परंपरागत धर्म का स्वीकार न करने हुए उन में दिखाई देने वाले आडंबरों को फटकारते है। धर्म के नामपर जहाँ आडंबर चलने है उस धार्मिक कर्मकांड पर कवि ने अपनी कटु वाणी से प्रहार किया है। पोथी–पुराण, कुराण आदि खोलकर बैठनेवाले साधू, संत, मुल्ला, मौलावी जब सच को सच नही मानते है तो उस समय उन्हें अपने काव्य द्राराा फटकारने का कार्य दुश्यंतकुमार जी ने किया है।

''गजब है सच को सच कहते नही वो,
कुरानों उपनिशद खोले हुए है।
मज़ारों से दुआएँ माँगते हो,
अकीदे किस कदर पोले हुए है।''

अपनी विद्रोही वृत्तिका परिचय उन्हौंने अपने काव्य के माध्यम से दिया है, जो है वह ठीक नही है अतः उस में परिवर्तन की आवश्यकता कवि महसुस करता है। भश्ट्रता के विरोध में दुश्यंत कुमार विद्रोह की आग जलाना चाहते है, कवि पुरी व्यवस्था ही बदलना चाहते है, उनका यह व्यक्तित्व उनके पुरे काव्य में प्रकट हुआ है। वह आम आदमी को क्रांति के लिए प्रेरित करना चाहते है। दुश्यंत कुमार जी ने अपनी गजलों के माध्यम से परंपरागत विशयों को हटाकर उस में आम आदमी का दुःख पीड़ा का कथन अपनी रचनाआँ के माध्यम से किया है। उन्हौंने सामाजिक समस्याओं को सामने लाने का प्रयास अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। उन्हें लगता है, की पुरी व्यवस्था को ही बदलना चाहीए –

''मेरे सीने में नही तो तेरे सीने में सही,
हो कही भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नही,
मेरी कोशिश है कि सूरत बदलनी चाहिए।

दुश्यंत कुमार यह एक रोशनी के अन्वेशक कवि है, उनकी रचनाओं का मुख्य विशय मानव की पीड़ा को दूर करना रहा है। यह दूर करना ही कवि अपना धर्म मानता है। उनकी 'कैद परिन्दे का बयान' मानव की मुक्ति की कविता है इस कविता में कवि अपने दायित्व का निर्वाह करना चाहता हैं। कवि को आत्म पराजय मंजुर नही है इसलिए वह अपनी पाक्तियों के माध्यम से कहता है –

''धिक !मेरा काव्यात्व
कि जिसने टेका माथा,
ये अपने से ही अपने की हार
और में देख रहा हूँ।''

दुश्यंतजी की कविता नई पीढी को प्रेरणा देते हुए स्वागत करने वाली है। कवि की दूसरी महत्वपूर्ण रचना 'एक कंण्ठ विशपायी' है। जिसमें कवि ने आधुनिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। साथ–साथ नए मूल्यों को संकेतित भी किया है। कविने इस रचना के माध्यंम से तिखा व्यंग्य किया है।

'सिर्फ लोग नही है तो क्या हुआ
लोगों के होने न होने से
क्या कोई दृश्य की महत्ता कम होती है?''

कवि ने अपने काव्य के माध्यम से नए मानव मूल्य को स्वीकार किया है। आधुनिक दमन, हत्या, सत्ता की सनक, युध्द की भयानकता पर भी कवि ने व्यंग किया है। उनका महत्वपूण काव्य संग्रह 'साये में धूप' यह उनकी कलात्मकता का उदाहरण है। हिंदी गजल को एक अलग रुप में उन्हौंने पेश किया है। और उसे रोजमर्रा की जिंदगी से जोड दिया। इसमें शोशण पराजय, दैन्य, उत्पीडन और दुर्व्यवस्था की निर्भिक अभिव्यक्ति है। कवि की आस्था का केंद्र मानव रहा है, और इसलिए मानव की हर समस्याओं का जैसे, भुख, बेरोजगारी, अन्याय, अत्याचार का चित्रण उनकी गजलों में आया है। देश की स्थिती, आजादी की त्रासदी का चित्रण देखिए।

कल नुमाइश में मिला वो चिथडे पहने हुए,
मैने पूछा नाम तो बोला कि हिन्दुस्थान है।''

दुश्यंत कुमार जी सामान्य जनता को विद्रोह करने को कहते है, वह विद्रोह सामाजिक विड़बनाओं से मुक्ति के लिए है। वह जनाता को विद्रोह के रास्ते पर चलने के लिए कहते है। कवि अपनी गजलो़ के माध्यम से मनुश्य की आर्थिक और सामाजिक स्थिति कोदेखकर अस्वस्थ होते है। इसलिए वे सामान्य जनता को इस स्थिति के खिलाफ लढने के लिए कहते है। देश की सामाजिक दशा को सुधारने के लिए अन्याय, अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए कहते है। सामान्य जनता को संकटग्रस्त स्थिति से उबरने के लिए मिलकर एक साथ लड़ने के लिए कहते है। कवि समाज में व्याप्त भ्रष्ट्राचार, कुरीतियाँ अनैतिकता तथा विनाशकारी तत्वों का सफया करने के लिए आम जनता को सामाजिक क्रांती के लिए प्रेरित करना चाहते है। देश की आम जनता के ह्रदय में असंतोश के कारण कुंठित लोगो को अपने से बाहर निकालकर विशम सताज व्यवस्था को परिवर्तित करने का संदेश देते हुए वे कहते है।

''अब तो इस तालाब का पानी बदल दो
ये कँवल के फूल कुम्हलाने लगे है।''

निष्कर्ष :
रुप में कहाँ जा सकता है,की दुश्यंतकुमार जी एक आधुनिक प्रगतिशील कवि है। जिन्होंने अपने काव्य, गज़ल के माध्यंम से जनता के दुःख उनके ऊपर होनेवाले अन्याय, आत्याचार को अपने काव्य के माध्यंम से सामने लाने का प्रयास किया है। कवि कहता है,की बस हो गया तुम्हारा यह सहन करना अब आप इसके खिलाफ आवाज उठ़ाना सिखों कब तक ऐसे अन्याय अत्याचार सहते रहोगे अपनी इस रचनाओं के माध्यंम से राजनितियों व्दारा जनता पर होनेवाले अन्याय के खिलाफ जनता का लड़ने को कवि कहता है उनकी सामाजिक चेतना को देखकर डॉ रणजीत लिखते है, ''प्रगतशील जनवादी भाव और विचार सुत्रों से संग्रहित इन गजलों के अनेक भोर सूक्तियों और मुहावरों की तरह प्रबुध्द लोगो की जुबान पर चढ़ गए है।'' उनकी गज़लो में सामाजिक जीवन की समग्रता और जटिलता का सुक्ष्म अंकन हुआ है

संदर्भ ग्रंथ :

I. हिंदी की प्रगतिशील कविता – डॉ सलमा खान
II. हिंदी एवं मराठी प्रगतिशील कविता – राष्ट्रीय संगोश्ठी, बीड
III. हिंदी साहित्य का इतिहास – यशवंतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ नाशिक
IV. आयुशी इटरनँशनल रिसर्च जनरल – जनवरी – 2018